अम्बर या बेली की रोकथाम

इस बीमारी को स्थान विशेष के अनुसार अलग–अलग नामों जैसे बेली बनना, पूरईन, अम्बर अथवा फूल निकलना (प्रोलेप्स यूटरस) आदि नामों से जानते है। इसमें गर्भाशय अथवा गर्भाशय का कुछ भाग बाहर निकल आता है। भैंसों की अपेक्षा गायों में यह रोग अधिक होता है। यह समस्या प्रसव के बाद की अपेक्षा पूर्व में अधिक पायी जाती है। यदि समय पर इसका उपचार न किया गया तो यह समस्या गम्भीर रूप ले सकती है।

कारण

- मादा का ढ़लान वाले स्थान पर लम्बे समय तक बंधे रहना।
- उदर का अधिक भरा होने पर गर्भाशय पर दबाव पड़ना।
- आहार में कैल्सियम की मात्रा कम होना।
- गर्भकाल के अंतिम माह में ईस्ट्रोजेनयुक्त चारा खिलाना।
- प्रसव के दौरान बच्चे को बलपूर्वक खींचना।
- रक्त में कैल्सियम एवं फास्फोरस की कमी होना।
- कुपोषण अथवा लगातार असंतुलित आहार देना।
- बच्चेदानी में जलन या संक्रमण होना।
- गर्भकाल के समय प्रोजेस्ट्रान हार्मोन की कमी होना।

उपचार

1. संतुलित आहार दें।
2. आहार में हरे चारे को वरीयता दें।
3. आहार के साथ खड़िया, नमक एवं 40–50 ग्राम खनिज लवण प्रतिदिन दें।
4. पशु–चिकित्सक से मिलकर कैल्सियम का इंजेक्शन लगवायें एवं सलाह लें।